Dr. RANJEET KUMAR
Deptt. of History
H.D. Jain College, Ara.

Notes For - M.A - sem - III, unit - IV, CC-13

Topic:- कैबिनेट मिशन (Cabinet Mission):-

मार्च 24, 1946 ई. को कैबिनेट मिशन दिल्ली पहुँचा। इसके सदस्यों में पैंथिक लॉरेन्स, सर स्टेफोर्ड क्रिप्स तथा ए. वी. अलेक्जेंडर थे। जिन्होंने भारतीय नेताओं के साथ लम्बी बातचीत की। जिसमें कांग्रेस तथा लीग किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुँच सके थे। लीग के पाकिस्तान की मांग पर ही समझौता नहीं हो सका था। इस मिशन ने अपनी एक कार्य योजना 16 मई, 1946 को प्रस्तुत की। —

(1.) एक पूर्ण अधिकृत पाकिस्तान की, लीग की मांग को ठुकरा दिया गया।

(2.) प्रांतीय विधान मंडलों के तीन खण्ड बना दिए गए —

(i) मद्रास, बम्बई, केन्द्रीय प्रांत, संयुक्त प्रांत बिहार, तथा उड़ीसा।

(ii) उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत सिंध (मुस्लिम बहुल प्रांत)।

(iii) बंगाल तथा असम प्रान्तों की पूर्ण स्वायत्तता तथा समूहों में विभाजन का तात्पर्य, मुस्लिम लीग को "पाकिस्तान का अंश" देने में था।

(3.) समानुपातिक प्रतिनिधित्व द्वारा प्रान्तीय सभाओं द्वारा एक संविधान सभा निर्वाचित हो (समूहों में मतदान-सामान्य, मुस्लिम, सिक्ख)। यह संविधान सभा 389 सदस्यों की होगी, जिसमें 292 सदस्य प्रांतों से भेजे जाएंगे। मुख्य आयुक्तों के प्रान्त 4 तथा 93 रजवाड़े राज्यों द्वारा भेजी जाएंगी।

(4.) संविधान सभा मे; सभी समूह एक साथ बैठकर प्रांतो के लिए संविधान का निर्माण करेंगे तथा यदि संभव होगा, तो सारे समूह मिलकर भी संघ संविधान का निर्माण कर सकेंगे।

(5.) रक्षा, संचार, तथा विदेश कार्यों को समान केन्द्र देखेगा।

(6.) प्रांतो के पास पूर्ण स्वायत्तता तथा अतिरिक्त शक्तियां होगी।

(7.) राजवाडे राज्यों को लम्बे समय तक ब्रिटिश सर्वश्रेष्ठता के अंतर्गत नही रखा जाएगा; तथा वे पूरी तरह किसी भी सरकार में सम्मिलित होने या ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में रहने के लिए स्वतंत्र होगें।

(8.) संविधान सभा अंतरिम सरकार से बनेगी।

संविधान सभा के चुनाव मे (जो जुलाई 1946)

कांग्रेस ने 205 सीटों पर तथा लीग ने 73 सीटों पर कब्जा किया। 4 सीट सिक्कों को मिली, जिनपर कांग्रेस के साथ तालमेल था। इस प्रकार 296 की सभा में कांग्रेस के 209 सदस्य थे। कांग्रेस का बहुमत लीग से सहन नही हुआ और उसने कैबिनेट मिशन को ठुकरा दिया तथा 29 जुलाई, 1946 को उसने यह घोषणा की कि वह 16 August, 1946 को "सीधी कार्यवाही" का दिन मनाएगी। इसके पश्चात् भारत, साम्प्रदायिकता की आग में जलने लगा। दंगो में लगभग 5,000 लोग मारे गए। सबसे बुरी स्थिति कलकता, बम्बई, नोआखली, बिहार, गढ़मुक्तेश्वर (U.P.) की थी।